8

हम तो कबहुँ न निज घर आये....

(कविवर पण्डितश्री द्यानतरायजी)

परघर फिरत बहुत दिन बीते, नाम अनेक धराये ॥हम तो. ॥

परपद निजपद मानि मगन ह्वै, पर परनति लपटाये।
शुद्ध बुद्ध सुखकंद मनोहर, आतम गुण नहिं गाये ॥1 ॥

नर पशु देव नरक निज मान्यो, परजयबुद्ध लहाये।
अमल अखंड अतुल अविनाशी, चेतन भाव न भाये ॥2 ॥

हित अनहित कछु समझ्यो नाहीं, मृगजलबुध[१] ज्यों धाये।
'द्यानत' अब निज-निज, पर-पर है, सद्गुरु बैन[२] सुहाये ॥3 ॥

---

१. मृगतृष्णारूपी बुद्धि; २. वचन